IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429
Volume 6, Issue 11, June 2026
Impact Factor: 8.2

भिंड जिले के ऐतिहासिक स्मारकों का सामाजिक, सांस्कृतिक एवं पर्यटन महत्व

धर्मेन्द्र सिंह[1], डॉ. सुरेश चंद[2]

[1]शोधार्थी, [2]प्रोफेसर

इतिहास-विभाग

विक्रांत विश्वविद्यालय ग्वालियर म.प्र

सारांश : *भिंड जिला मध्य प्रदेश के उत्तर-पूर्वी भाग में स्थित एक ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण क्षेत्र है। चंबल अंचल का यह जिला प्राचीन मंदिरों, किलों, स्मारकों तथा धार्मिक स्थलों के लिए प्रसिद्ध है। अटेर किला, गोहद किला, वनखंडेश्वर मंदिर, पवाई माता मंदिर तथा आलमपुर स्थित मल्हारराव होल्कर की छत्री जैसे स्मारक जिले की समृद्ध ऐतिहासिक विरासत का प्रतिनिधित्व करते हैं। इन स्मारकों ने स्थानीय समाज की सांस्कृतिक पहचान, धार्मिक परंपराओं तथा आर्थिक गतिविधियों को संरक्षित रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। वर्तमान समय में पर्यटन विकास के माध्यम से इन स्थलों की आर्थिक उपयोगिता भी निरंतर बढ़ रही है। यदि इन स्मारकों का वैज्ञानिक संरक्षण, उचित प्रचार-प्रसार तथा आधुनिक पर्यटन सुविधाओं का विकास किया जाए तो भिंड जिला मध्य प्रदेश के प्रमुख विरासत पर्यटन केंद्रों में विकसित हो सकता है।*

मुख्य संकेतक : ऐतिहासिक स्मारक, सांस्कृतिक विरासत, पर्यटन, अटेर किला, गोहद किला।

I. परिचय

भारत की सांस्कृतिक धरोहर में मध्य प्रदेश का विशेष स्थान है। भिंड जिला अपनी ऐतिहासिक पृष्ठभूमि, धार्मिक परंपराओं तथा स्थापत्य कला के कारण विशेष महत्व रखता है। चंबल नदी के किनारे स्थित यह क्षेत्र प्राचीन काल से विभिन्न राजवंशों भदौरिया, जाट, मराठा तथा सिंधिया के शासन का केंद्र रहा है। परिणामस्वरूप यहाँ अनेक किले, मंदिर तथा स्मारक निर्मित हुए, जो आज भी इतिहास के महत्वपूर्ण साक्ष्य हैं। इनमें अटेर किला, वनखंडेश्वर मंदिर, पवाई माता मंदिर तथा आलमपुर की छत्री प्रमुख हैं। ये स्मारक केवल स्थापत्य की दृष्टि से महत्वपूर्ण नहीं हैं बल्कि स्थानीय समाज, संस्कृति एवं पर्यटन उद्योग के विकास में भी महत्वपूर्ण योगदान देते हैं।

II. अध्ययन क्षेत्र के प्रमुख ऐतिहासिक स्मारक

भिंड जिला मध्य प्रदेश के उत्तर-पूर्वी भाग में स्थित एक ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण क्षेत्र है। यह जिला चंबल नदी के बीहड़ों, प्राचीन सभ्यता, राजवंशीय विरासत तथा धार्मिक आस्थाओं के लिए प्रसिद्ध रहा है। प्राचीन काल से लेकर मध्यकाल

Copyright to IJARSCT
www.ijarsct.co.in
DOI: 10.48175/568

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429 Volume 6, Issue 11, June 2026 Impact Factor: 8.2

और आधुनिक काल तक भिंड विभिन्न शासकों, विशेषकर भदौरिया राजपूतों, जाट शासकों, मराठों तथा सिंधिया वंश के प्रभाव में रहा, जिसके परिणामस्वरूप यहाँ अनेक दुर्ग, मंदिर, छतरियाँ तथा धार्मिक स्थल निर्मित हुए। ये ऐतिहासिक स्मारक न केवल तत्कालीन स्थापत्य कला और राजनीतिक इतिहास के साक्ष्य हैं, बल्कि स्थानीय समाज की सांस्कृतिक पहचान, धार्मिक परंपराओं तथा पर्यटन विकास के प्रमुख आधार भी हैं । अध्ययन क्षेत्र के प्रमुख ऐतिहासिक स्मारकों में अटेर किला, गोहद किला, वनखंडेश्वर मंदिर, पवाई माता मंदिर तथा आलमपुर स्थित मल्हारराव होल्कर की छत्री विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं।

अटेर किला भिंड जिले का सबसे महत्वपूर्ण ऐतिहासिक स्मारक माना जाता है। यह किला चंबल नदी के निकट अटेर कस्बे में स्थित है और इसका निर्माण मुख्यतः भदौरिया राजपूत शासकों द्वारा सत्रहवीं शताब्दी में कराया गया था। किले का निर्माण सामरिक दृष्टि से अत्यंत उपयुक्त स्थान पर किया गया था ताकि चंबल घाटी तथा आसपास के व्यापारिक मार्गों की सुरक्षा सुनिश्चित की जा सके। अटेर किले की स्थापत्य शैली में राजपूत और मुगल वास्तुकला का सुंदर समन्वय देखने को मिलता है। विशाल प्राचीरें, ऊँचे बुर्ज, भव्य प्रवेश द्वार, राजमहल, दीवान-ए-आम, दीवान-ए-खास, जल प्रबंधन प्रणाली तथा भूमिगत मार्ग इसकी विशेषताएँ हैं। किले के भीतर स्थित महलों की नक्काशी, झरोखे तथा कलात्मक दीवारें तत्कालीन स्थापत्य कला की उत्कृष्टता को प्रदर्शित करती हैं। यह किला न केवल भदौरिया शासकों की शक्ति और समृद्धि का प्रतीक है, बल्कि क्षेत्र के राजनीतिक एवं सैन्य इतिहास का भी महत्वपूर्ण स्रोत है। वर्तमान में यह स्मारक इतिहासकारों, पुरातत्वविदों, शोधार्थियों तथा पर्यटकों के आकर्षण का प्रमुख केंद्र है ।

अध्ययन क्षेत्र का दूसरा प्रमुख ऐतिहासिक स्मारक गोहद किला है, जो भिंड जिले के गोहद नगर में स्थित है। इस किले का निर्माण जाट शासकों द्वारा सोलहवीं शताब्दी के उत्तरार्ध में कराया गया था। गोहद रियासत मध्य भारत के प्रमुख जाट राज्यों में से एक थी और यह किला उसकी राजनीतिक शक्ति तथा प्रशासनिक व्यवस्था का केंद्र था। किले की सुरक्षा व्यवस्था अत्यंत सुदृढ़ थी, जिसमें ऊँची दीवारें, विशाल द्वार, प्रहरी बुर्ज तथा चौड़ी खाई का निर्माण किया गया था। गोहद किले की वास्तुकला स्थानीय निर्माण शैली तथा सैन्य आवश्यकताओं के अनुरूप विकसित हुई थी। इतिहास में यह किला मराठों, जाटों और सिंधिया शासकों के मध्य हुए अनेक संघर्षों का साक्षी रहा है। वर्तमान समय में यह स्मारक क्षेत्र की जाट सांस्कृतिक विरासत का महत्वपूर्ण प्रतीक माना जाता है तथा इतिहास और स्थापत्य कला के अध्ययन के लिए अत्यंत उपयोगी है ।

वनखंडेश्वर मंदिर भिंड नगर का एक अत्यंत प्राचीन एवं प्रतिष्ठित धार्मिक-ऐतिहासिक स्मारक है। यह मंदिर भगवान शिव को समर्पित है और स्थानीय परंपराओं के अनुसार इसका संबंध महाभारत काल से माना जाता है। यद्यपि इसके निर्माण काल के संबंध में विभिन्न मत उपलब्ध हैं, फिर भी इसे मध्य भारत के प्राचीन शिव मंदिरों में स्थान प्राप्त है। मंदिर की स्थापत्य शैली में नागर शैली के तत्व स्पष्ट दिखाई देते हैं। पत्थर पर की गई उत्कृष्ट नक्काशी, गर्भगृह, मंडप तथा शिखर इसकी प्रमुख विशेषताएँ हैं। प्रत्येक वर्ष महाशिवरात्रि के अवसर पर यहाँ विशाल मेले का आयोजन होता है, जिसमें हजारों श्रद्धालु भाग लेते हैं। धार्मिक दृष्टि से यह मंदिर स्थानीय समाज की आस्था का प्रमुख केंद्र होने के साथ-साथ सांस्कृतिक गतिविधियों एवं लोक परंपराओं के संरक्षण में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। यह स्थल धार्मिक पर्यटन की दृष्टि से भी अत्यधिक महत्वपूर्ण है और जिले की सांस्कृतिक पहचान को सुदृढ़ बनाता है ।

पवाई माता मंदिर भी भिंड जिले का एक प्रमुख धार्मिक एवं ऐतिहासिक स्मारक है। यह मंदिर देवी शक्ति की उपासना का महत्वपूर्ण केंद्र है तथा मध्य प्रदेश और उत्तर प्रदेश के सीमावर्ती क्षेत्रों से बड़ी संख्या में श्रद्धालु यहाँ दर्शन हेतु आते हैं। नवरात्रि के दौरान यहाँ विशाल धार्मिक मेले का आयोजन होता है, जिससे स्थानीय अर्थव्यवस्था को भी प्रोत्साहन मिलता है। मंदिर की स्थापत्य शैली प्राचीन भारतीय मंदिर वास्तुकला का उत्कृष्ट उदाहरण प्रस्तुत करती है। यहाँ की मूर्तिकला, धार्मिक अनुष्ठान तथा लोक परंपराएँ क्षेत्र की

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429 Volume 6, Issue 11, June 2026 Impact Factor: 8.2

सांस्कृतिक विरासत को संरक्षित रखने में महत्वपूर्ण योगदान देती हैं। यह मंदिर धार्मिक पर्यटन के साथ-साथ सांस्कृतिक अध्ययन के लिए भी महत्वपूर्ण स्थल माना जाता है।

आलमपुर स्थित मल्हारराव होल्कर की छत्री अध्ययन क्षेत्र का एक अत्यंत महत्वपूर्ण स्मारक है। मराठा साम्राज्य के महान सेनानायक मल्हारराव होल्कर की स्मृति में निर्मित यह छत्री मराठा स्थापत्य कला का उत्कृष्ट उदाहरण है। इस स्मारक का निर्माण अठारहवीं शताब्दी में कराया गया था और इसकी वास्तुकला में राजपूत तथा मराठा शैली का सुंदर समन्वय दिखाई देता है। छत्री में सुंदर स्तंभ, अलंकृत छत, नक्काशीदार दीवारें तथा उत्कृष्ट शिल्पकला देखने को मिलती है। यह स्मारक मराठा इतिहास तथा मध्य भारत की राजनीतिक घटनाओं का महत्वपूर्ण साक्ष्य है। प्रतिवर्ष अनेक शोधार्थी एवं पर्यटक इस स्थल का भ्रमण करते हैं और मराठा इतिहास के अध्ययन में इसकी विशेष उपयोगिता है।

भिंड जिले के इन प्रमुख स्मारकों के अतिरिक्त अनेक छोटे-बड़े प्राचीन मंदिर, बावड़ियाँ, तालाब, प्राचीन घाट, समाधियाँ तथा धार्मिक स्थल भी अध्ययन क्षेत्र की ऐतिहासिक धरोहर का हिस्सा हैं। चंबल नदी के तटवर्ती क्षेत्र में स्थित अनेक प्राचीन अवशेष इस बात का प्रमाण हैं कि यह क्षेत्र प्राचीन काल से ही मानव बसावट एवं सांस्कृतिक गतिविधियों का केंद्र रहा है। विभिन्न पुरातात्विक अवशेष, प्राचीन मूर्तियाँ तथा शिलालेख क्षेत्र के समृद्ध ऐतिहासिक अतीत का परिचय कराते हैं। इन स्थलों का वैज्ञानिक संरक्षण एवं व्यवस्थित दस्तावेजीकरण भविष्य के शोध कार्यों के लिए अत्यंत आवश्यक है।

अध्ययन क्षेत्र के ऐतिहासिक स्मारक केवल स्थापत्य कला या धार्मिक आस्था के प्रतीक नहीं हैं, बल्कि वे स्थानीय समाज की सांस्कृतिक स्मृति, सामाजिक एकता तथा ऐतिहासिक चेतना के प्रमुख आधार भी हैं। इन स्मारकों के माध्यम से क्षेत्र के निवासियों में अपनी विरासत के प्रति गौरव की भावना विकसित होती है तथा नई पीढ़ी को अपने इतिहास एवं संस्कृति से परिचित होने का अवसर प्राप्त होता है।

साथ ही, इन स्थलों पर प्रतिवर्ष आने वाले पर्यटकों और श्रद्धालुओं से स्थानीय व्यापार, परिवहन, होटल, हस्तशिल्प तथा अन्य सेवा क्षेत्रों में रोजगार के अवसर भी उत्पन्न होते हैं। यदि इन स्मारकों का समुचित संरक्षण, आधुनिक पर्यटन सुविधाओं का विकास तथा प्रभावी प्रचार-प्रसार किया जाए तो भिंड जिला मध्य प्रदेश के प्रमुख विरासत पर्यटन केंद्रों में विकसित हो सकता है।

क्रम	स्मारक	निर्माण काल	ऐतिहासिक महत्व	पर्यटन महत्व
1	अटेर किला	17वीं शताब्दी	भदौरिया राजाओं का दुर्ग	प्रमुख विरासत पर्यटन स्थल
2	गोहद किला	16वीं शताब्दी	जाट शासकों का ऐतिहासिक दुर्ग	स्थापत्य एवं इतिहास प्रेमियों का आकर्षण
3	वनखंडेश्वर मंदिर	प्राचीन काल	प्राचीन शिव मंदिर	धार्मिक पर्यटन
4	पवाई माता मंदिर	11वीं शताब्दी	शक्तिपीठ एवं धार्मिक आस्था	नवरात्रि मेला एवं तीर्थ पर्यटन
5	मल्हारराव होल्कर की छत्री (आलमपुर)	1766 ई.	मराठा इतिहास	विरासत पर्यटन

स्रोत: भिंड जिला प्रशासन एवं पर्यटन विभाग।

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429
Volume 6, Issue 11, June 2026
Impact Factor: 8.2

सामाजिक महत्व

भिंड जिले के ऐतिहासिक स्मारक स्थानीय समाज के सामाजिक जीवन का अभिन्न अंग हैं। वनखंडेश्वर मंदिर तथा पवाई माता मंदिर में आयोजित धार्मिक मेलों से सामाजिक एकता एवं सांस्कृतिक समरसता को बढ़ावा मिलता है। इन आयोजनों में विभिन्न वर्गों के लोग सम्मिलित होकर सामाजिक संबंधों को सुदृढ़ बनाते हैं।

अटेर किला एवं गोहद किला स्थानीय लोगों में अपने गौरवपूर्ण इतिहास के प्रति जागरूकता उत्पन्न करते हैं। विद्यालयों एवं महाविद्यालयों के विद्यार्थी इन स्थलों का भ्रमण कर क्षेत्रीय इतिहास का अध्ययन करते हैं। इससे ऐतिहासिक चेतना तथा विरासत संरक्षण की भावना विकसित होती है।

सांस्कृतिक महत्व

भिंड जिले की सांस्कृतिक पहचान इन स्मारकों से गहराई से जुड़ी हुई है। यहाँ के मंदिरों, किलों तथा छतरियों में राजपूत, मराठा एवं स्थानीय स्थापत्य शैली का अद्‌भुत समन्वय दिखाई देता है।

नवरात्रि, महाशिवरात्रि, दशहरा एवं अन्य धार्मिक उत्सव इन स्मारकों के आसपास विशेष उत्साह से मनाए जाते हैं। लोकगीत, लोकनृत्य, पारंपरिक हस्तशिल्प एवं धार्मिक अनुष्ठान स्थानीय सांस्कृतिक विरासत को जीवित रखते हैं।

ऐतिहासिक स्मारक नई पीढ़ी को अपनी सांस्कृतिक जड़ों से जोड़ने का महत्वपूर्ण माध्यम हैं।

पर्यटन महत्व

भिंड जिले में पर्यटन की अपार संभावनाएँ हैं। अटेर किला, गोहद किला तथा चंबल नदी पर्यटकों के प्रमुख आकर्षण हैं। धार्मिक पर्यटन के अंतर्गत वनखंडेश्वर मंदिर तथा पवाई माता मंदिर में प्रतिवर्ष हजारों श्रद्धालु आते हैं।

पर्यटन से स्थानीय स्तर पर होटल, परिवहन, भोजनालय, हस्तशिल्प तथा मार्गदर्शक सेवाओं में रोजगार के अवसर बढ़ते हैं। यदि इन स्थलों पर आधुनिक सुविधाएँ विकसित की जाएँ तो घरेलू एवं विदेशी पर्यटकों की संख्या में उल्लेखनीय वृद्धि हो सकती है।

तालिका 2 : स्मारकों का सामाजिक, सांस्कृतिक एवं पर्यटन योगदान

स्मारक	सामाजिक योगदान	सांस्कृतिक योगदान	पर्यटन योगदान
अटेर किला	ऐतिहासिक जागरूकता	स्थापत्य विरासत	विरासत पर्यटन
गोहद किला	स्थानीय गौरव	जाट संस्कृति	इतिहास पर्यटन
वनखंडेश्वर मंदिर	धार्मिक एकता	शिव परंपरा	धार्मिक पर्यटन
पवाई माता मंदिर	सामाजिक मेल-मिलाप	शक्ति उपासना	तीर्थ पर्यटन
आलमपुर छत्री	ऐतिहासिक शिक्षा	मराठा विरासत	सांस्कृतिक पर्यटन

प्रमुख चुनौतियाँ

समस्या	प्रभाव
संरक्षण का अभाव	स्मारकों का क्षरण

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429
Volume 6, Issue 11, June 2026
Impact Factor: 8.2

पर्यटन सुविधाओं की कमी	पर्यटकों की कम संख्या
प्रचार-प्रसार का अभाव	राष्ट्रीय पहचान सीमित
अवैध अतिक्रमण	विरासत को नुकसान
वित्तीय संसाधनों की कमी	संरक्षण कार्य प्रभावित

संरक्षण एवं पर्यटन विकास हेतु सुझाव

1. ऐतिहासिक स्मारकों का वैज्ञानिक संरक्षण किया जाए।
2. भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण एवं राज्य पुरातत्व विभाग के सहयोग से नियमित मरम्मत कराई जाए।
3. डिजिटल प्रचार, वेबसाइट एवं सोशल मीडिया के माध्यम से विरासत पर्यटन को बढ़ावा दिया जाए।
4. स्थानीय युवाओं को पर्यटन गाइड के रूप में प्रशिक्षित किया जाए।
5. विरासत पर आधारित सांस्कृतिक उत्सव एवं पर्यटन महोत्सव आयोजित किए जाएँ।
6. सड़क, प्रकाश व्यवस्था, पार्किंग एवं स्वच्छता जैसी आधारभूत सुविधाओं का विकास किया जाए।
7. विद्यालय एवं विश्वविद्यालय स्तर पर विरासत शिक्षा को प्रोत्साहित किया जाए।

निष्कर्ष

भिंड जिले के ऐतिहासिक स्मारक केवल अतीत की धरोहर नहीं हैं, बल्कि वर्तमान एवं भविष्य के सामाजिक, सांस्कृतिक तथा आर्थिक विकास के महत्वपूर्ण आधार भी हैं। अटेर किला, गोहद किला, वनखंडेश्वर मंदिर, पवाई माता मंदिर तथा आलमपुर की छत्री जिले की ऐतिहासिक पहचान को सशक्त बनाते हैं। इन स्मारकों के माध्यम से स्थानीय संस्कृति का संरक्षण, सामाजिक एकता का विकास तथा पर्यटन उद्योग का विस्तार संभव है। यदि संरक्षण, आधारभूत सुविधाओं तथा पर्यटन प्रबंधन पर विशेष ध्यान दिया जाए तो भिंड जिला मध्य प्रदेश के प्रमुख विरासत पर्यटन स्थलों में अपना महत्वपूर्ण स्थान बना सकता है।

संदर्भ

1. तिवारी, एस. (2020). मध्य प्रदेश की स्थापत्य विरासत और ऐतिहासिक स्मारक। इंडियन जर्नल ऑफ़ हिस्ट्री एंड कल्चर, 11(2), 97–110.
2. दीवान, एच. डी., भदौरिया, एस. एस., कडवे, पी., और सान्याल, डी. (2021). रक्षा रणनीति और किलेबंदी में इलाके की स्थितियों की उपयुक्तता: भारत के मध्य प्रदेश के भिंड में ऐतिहासिक हिंदू गोहद किले के वास्तुशिल्प तत्व। जर्नल ऑफ़ इंटीरियर डिज़ाइनिंग एंड रीजनल प्लानिंग, 6(2), 1–12.
3. पाटिल, डी. आर. (1952). मध्य भारत की सांस्कृतिक विरासत। ग्वालियर: मध्य भारत सरकार।
4. भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण। (1961). भारतीय पुरातत्व: एक समीक्षा, 1960–61। नई दिल्ली: भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण।
5. मध्य प्रदेश सरकार। (1996). मध्य प्रदेश जिला गजेटियर: भिंड। भोपाल: गजेटियर निदेशालय।

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429
Volume 6, Issue 11, June 2026
Impact Factor: 8.2

6. मिश्रा, आर. के. (2019). ऐतिहासिक स्मारक और सांस्कृतिक पर्यटन: मध्य भारत में विरासत स्थलों का अध्ययन। जर्नल ऑफ़ टूरिज्म, हॉस्पिटैलिटी एंड स्पोर्ट्स, 45, 18–27.
7. वर्मा, ए., और देवी, ए. (2024). बुंदेलखंड क्षेत्र की ऐतिहासिक और सांस्कृतिक विरासत का संरक्षण, GIS तकनीकों का उपयोग करके विज़ुअलाइज़ेशन। शोधकोश: जर्नल ऑफ़ विज़ुअल एंड परफॉर्मिंग आर्ट्स, 5(2), 1–12.
8. शर्मा, ए., और वर्मा, एस. (2020). मध्य प्रदेश में सांस्कृतिक विरासत पर्यटन और सतत विकास। जर्नल ऑफ़ टूरिज्म एंड हॉस्पिटैलिटी मैनेजमेंट, 8(2), 73–84.
9. शर्मा, वी. (2017). मध्य प्रदेश में किलों का विरासत संरक्षण और पर्यटन की संभावना। इंटरनेशनल जर्नल ऑफ़ साइंटिफिक रिसर्च, 6(8), 512–515. गुप्ता, आर., और सिंह, पी. (2022). भारत में सांस्कृतिक विरासत प्रबंधन और टिकाऊ पर्यटन। जर्नल ऑफ़ हेरिटेज मैनेजमेंट, 7(1), 56–72.
10. सिंह, आर. (2018). भारत में विरासत पर्यटन और ऐतिहासिक स्मारकों का संरक्षण। इंटरनेशनल जर्नल ऑफ़ रिसर्च इन सोशल साइंसेज, 8(4), 125–134.
11. सिंह, एस., और यादव, पी. (2021). भारत में विरासत स्मारकों का संरक्षण और पर्यटन विकास। इंटरनेशनल जर्नल ऑफ़ क्रिएटिव रिसर्च थॉट्स, 9(7), 450–458.